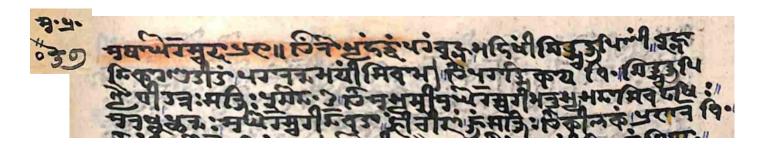
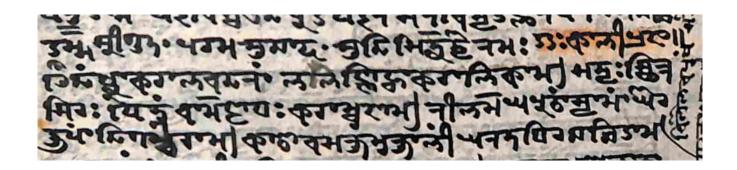
kupwara 3.pdf

This manuscript includes:

Puja Vidhi Mantras (Aghoreshwara Puja – Kali puja – Mrithyanjaya Puja - Others)



ण्यानानकमा लापिन्छं त्रित्ति । जिंग्ज्ञीमें : जलवणी मुद्देन्यः । जिंग्ज्ञीमें : जलवणी मुद्देन्यः । जिंग्ज्ञीमां : जलवणी मुद्देन्यः । ज्याने । जिंग्ज्ञीमां : जलवणी मुद्देन्यः । ज्याने । जलवणी मुद्देन्यः । जलवणी मुद्देन्यः



अरानिक्षिणका तेना प्रमाणा विश्व प्रमाण कि निर्माण के प्रमाण कि निर्माण के प्रमाण कि निर्माण कि निर



निन्निग्द्रवेभदक्त्यायभनयम्बद्धयालग्द्रम्यायम्बद्धयालग्द्रम्यायम्बद्धविणालस्यानिग्राभद्धविण्याभदम्द्विगा पद्मनिषयाभद्यभद्भति॥धृरुभद्धताष्ट्रसम्बद्धाः॥

विश्वयुन् मिव्युरुप्याममालठवेगानेनमः। पर्यन्मः। पर्यन्मः। विभूभाग भनक्षेत्रभार्त्भेतियोत्रयाप्रक्रियम्भर्भेत्रपत्रियां भतिने हुप्रभारिक काशित्रक्ष पर्मिय विनियम्न भवभेक्ष्य राम्येये प्रिण हर्या िक्षित्रं में क्रव्यं भिश्चेष्ठण्य क्रिया हरे विश्व स्थाय से प्रत्य कर भमभा विद्यानिम् प्रयोहेणभेनिक्न प्रमा हिन्द्रने शिव्याप्य। भम्भागाप्ति। इस्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स इयमिक्याम्बक्षाभरं मिक्गेइयो नल्विका में पिर भक्त मिक्गे र्ये वलपुनिव्या भारति मिन्गिक्य भव्छ उद्योग है। भारती भे तुंद्वितिकस्ति प्रथः भ्रापन्भेद्वियः भ्रापन्भः भहन्ति उद्यदमण्यु विश प्रिमेश्यणीग्वः मिवः भ्रमेश्रम्भवन ए मुश्रियु उहि विम्वहिस्मे णी भाग भाग भाग के का अपने में भाग भाग भाग के भाग में भाग के भाग क उधे पर्तेक मित्पद्व र्भुं मान् इत्न इक् मिव्द्वनं उत्वित् भाग्रहा सित्थिविभिन्न विकित्या भिन्न विकित्या ०१ अग्याय भए उत्तय विहीं भाः भः भेम के विभिम्प प्रभाष्य मेथा यस्म उक्तनण्यस्म न्यारः देरेथर् म्यू नेपरिक्त्य भिर्मणन्मः॥ मनाइतन्यमिष्डत्नंद्वस्ति सम्याद्वा विवर्षिष्येताला वेषिकत्वयामस्य विवर्षेष्या रेड्सी भी दी ममयमा में मेरिट। किम श्यास्य भी भाग भाग । विने पेडियास

अडक्लमेमाय स्टा

महिनाथार्य्य रिवं उद्यो द्वानंयवारिय निर्मिय विक्रिमेर्मा भागे लाग्ड्रक्रिया श्रेणंद्रमेरा दिला भ्रम्या माड्रमे प्रकृति । विक्रण्णभक्षियां अदिनयन विलम्द्रित विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रियां अदिन या विलम्द्रित विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रिक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रिक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रिक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रिक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रुक्त विक्रमें स्क्रिक्त विक्रमें स्क्रिक्त विक्रमें स्विक्रमें स्विक्र स्विक्र स्विक्र स्विक्र स्विक्र अभित्रवृद्धियः एएएएः भागनिष्ठकं भागवा वा वा भागित वा वर्गां वर्गां की मित्रि वर्ग की लक्षा में उद्देश के विनय गः गां के ही हैं वर्गां के वर्गां के किया है पर में कि भद्रम्यानविद्यानि एदिश्वानित प्रमद्रम्यानः वाताः स्राहित युक्त मार्ने के कि वे भेर ने हर्ययान मामन भान मुग्रम् गृह्णा मनिए कें केंद्र कि मिन्ने शिक्ष कि कि कि कि कि कि कि कि कुर्ण अभिगयायिक्षर इक्किन में इतिक अन्य निर्देशम पन िक्र्याण्यक्ष्मनास्न विद्वन्यविभागान्तराष्ट्रनेषं थंडवेर्डभेषिण न्हेंहिलेयट मनःकार्भनेन के पहर सने में यें वें में यें में नेते भनः मिसेय हरे एक ज्ञामन्त्र न्याः हम्यो व स्राल्में भन्य मन्द्र हरे प्रश्ने स्मी क्रियम् कृष्णे मन्द्र क्रियम् विस्ति स् विभूजमित्र स्थित क्षा कृष्ट भक्ष विस्ति स्वर्णे निय्ध्य हि भाउने इन खे भुग भून च्या द्वा तित्रभन्ने मुनाय ह वये विक्री ॥ हर्भियक्रम्

विके: भभिव वस्था भागा अक्ती वर्षा के के स्थानी उभी कि कार्य गञ्ज अनिष्ठ अनिष्ठ अगवन्तु एएन्किंगिभन्भ अभी किंगिभन् किम्यूमनयनभः एतिश्वग्भनेभूषं रिह्म्य्रहिन्भः वहकमभूषे क्रियंडी उंडेन्सण्युस्क्रभाइ लंडल विम्नेडिस्नेड्रेचीथिक मी पहिंमुलवे प्रति भृष्यामचप्यक्रमेन्ने वर्ष्यक्रम्य १ ० विक्वेड्रम् इस्मिन् विनामन्। पूरुभेष्ट्रलक्री हार्श ग्रेशिय क्रिया के प्रिक्य क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क् िंध्यांकलमभद्यस्भालद्याः अमेहेनः मुक्मिम् गुरुष् इस्तिमंभायः हिन्द्रं अधिकन्भः दिरो मुम्य हिन् यलभन यूनेमः लेकि अविद्यु रिनें लल्लय रिप्रें वयन रिमें वस्मा विदें क्रमण्य नमः विज्ञानना व्यक्त शिर्धिय प्रवृद्धिर्गि रीसीनिक्याडीय वाणीय विनिभेश्वेष्ठ वि उभयनभः अनुने श ब्द्रक्ट्रीय अथयाने अप्तयो भः अब्द्रियः निर्दे के लेक्परेनेंणः वणी वरे उने हिल्डाहे नपः इ द्वीमयनभेः पद्धान १ भद्धी अस्ति वर्षे वर्य विषक्यः भवग्रदन्विनेभः भन्त्रमञ्जूर्यातहेनभः प्रभाषत् + मियेनभः , उसाने,

म्पिनकं अद्याभि उद्याभनभः उठेइ उपल दिनुं गंगाथ उद्यासन्मार. यनभः कुरम्य रो भारते ए विद्याप्य उद्योतिक विनेकी मार्थ शिग्नाः मान्त्रिभिलेगनः नीरणाहं भार्मुल प्रमालाकाय ल्डि विनिनेन् नेहिमीपड्कि अल्येन द्र्ये ने अधि वीनभः मार्च न्या का का मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य के मार्य के मार्य के मार्य क जनायक्षत्रमानं कान् क्राक्षियुद्देनी विभूक्क्रययन्थः मिनकल्ली में ग्राया यभनाय क्यालक्ष्मी भेदराय भूमारी के य अपम् हिंदि के अपरिगालमया चित्र हिंदि विभुक्त सामित्र विभाजय िमत्त्र अकार्याल्य क्रम्या क्रिम्य मार्थिक मार व्यापाद्मकरवाकिनीम जिल्लुयनभाषिपाल व्यानकरम् धारा विश्वास्त्र के में किया है कि किया है कि किया है यभन्येनभः विच्वं प्रमुक्दम्य वग्र्यक्राभ्रुष्मा मन्भर एंग् विदी दंभभेकुंभग्युरीम विभग्येटेनमः एम्दल द्या क् मह्यक्रकम्महम्भ मुलस्या क्रियमच्ड्राभिष्ठ ल्या छिम्यनभः विष्ठ ती मन्यसं भन्या गारिका मिला भाग असे भने महत्र्य मानुभाषा गारिका भने कि हिन्दे नमः रहे भ रहेक्ने में सम्माप । इंडरं व मुध्य व न मा अ मूलको मिर्च यहिं थ

नूमन्भ विहीषाभुभम्यापन्थः वक्कणन्थः विद्वार्गिष्ट्रदेन विभवेह कुर्हन्यः भवासगण्या नाम्मप्र विभागविष्य यनभः छिन्ने विज्ञपाक्त्य नभः छिन्ने क्वडणहुग्य । विश्व विहा वर्धितः वश्रुक्षेत्रक रहिनम् विवर्धितान् रवाः म्बिहें में विभाग कर्ति कर कर कर के किया की की की की मी भा मिंद्रपुरा भार स्रिय में मुहित्र हमें लिश कि हा की साथ है? थहरान हुन मर्भा महान रिड्यु प्रथायि । बद् अप्रयाची उच् क्ष्यंत ३ हिं स्थर्गाण्यप्रिभ्द्रध्यक्ष प्रधार्थि ग्रायर् क्ष्य देश भएगण्याग्रित्रा गेरीएं ही मेरि: इत्र विलके ने लेपिड्र एन्वि किन्तनु भन्यानभः भन्य भद्धनु भ-भिद्धाः मुग्रेश्यम्भः सीग्रा ने हत्याय हिनीमिन्से दुमिया रेत में क्रवण में नाइटि गः मुख्य हल विगं क्लेश्वर्णयनभः विगं गोलम्य द्वेगा विअध्याय विगं विकिथ्ण्य विगं वि सम्य है ने कीयन्भाय है ने गलाएं स्य हिने ए हनन्य ०१३ हिम्मिन्र्याम् इयात्रयनम् स्रेव्हिण्एल्यम् हिंगी कि डिडिंग देशिन है बिहु इस्टम्न के के कि कर एक परमुक्त थक्यम् उत्रु रिस्रेगितिकं दिस्याल निविध्वरीगल्मे हर्णा।

उद्येति वित्तकरं मुम्मम् म्राम् किनिट्यानं परंभेरक्यलभी इकनम ये देशम्ये विकाश्वर्य विजयये दिनेत्वरे भर्ते विभानि वल्डिंगी छित्रुं गे गल्यिदिल्हियेनमः छंमीतिक्रीयुंगे भड़्याल्य धाउन्लह्यों व न्या भवत्य हर्या भग्यसे अर्थ नमः छन्नि इस् नि दिशदेश क्षाने का निष्ये निर्मित्र के प्रियो निर्मित्र के कि व्यक्तिथः गयशिक्तः भीपाम हिंद्दे वेद विश्व अलने दिनियेगः॥ मन वित्रुपस्मान् देवं भ्या व्यवक्ति अप्राः भ्यात्राम् कृतः भारति विदेशकर्षित्रभाषा । उत्रः अरः भारति ि अभूषण उद्यामान निम्यां क्रिक्यूय वद्युप्युगः भरः हिन्दुः थाइनः भर विषम्भनः पम्काः पम्पादसम्म हैः अपुम्रायस ०+ विवदलम्हेन्द्र रंक क्रिमीज्य भर्षम् रह्त भद्र रे वाड्मण्डलम्याम संभागकुरकेड भरालक्षकरइयं एक्संभिजयक्षनं क्रिक्षंग्ज्यस्मा

दिक्तः थर्तनेगि विदंधन्यम्य विभुद्रथक्षीन्य विदं दुक्तभन्य विष्यास्य सद्भुरपन्भः अलि विक्रिक्षेत्रिक्षा अवस्थानमः विकेत् क्यमिन्से रिक्रिक् थः शिले मियण्ये रिक्र क्वणय क्रिन उक्ति वि ि: न्युप्य द कि मिह्यु नम्: विकि एर्यू विवेहन्वनम् दे क्रिक य विने उथ्च रिन् भूष्ट्रिय विभेषष्ट्रिय विदिवकायन भारतिकार उपनलकिए हा अभीव भिक्त प्रतिः एपः वलंग् किरी एनं दिन्य नं बर्जा भष्टभनं नप्रसण्डि भिरभायं ग्रास्टे मि अयो अद् धन्तमेरप्यक्तमं द्वारं प्रचनंहर विहासुग्यिविश्वद्यान्यि अः धरः भुरे । विलिक्षीक्री प्राप्ति प्राप्ति का भाष भाषे प्रयम्भ िल्बीहर्ही क्षीति क्षिय प्राप्ति वास्ति कि कर कर अपने पाय नेइ. नेमः अभुय्बट प्रश्नितिका कि किन्द्र विक्ट विनि गरम्बर्गमुरं पर्यानं दम्हां अद्यु विश्व में भी मुश्मी क भर वेलक भन्म शींद्रभिधा ग्रेग्य ही सुनः स्थिदेवहर विश्व रूम्बर ग्रेंगीर विभिन्ने न्सः क्लिके ए ये विश्व विश्व रूप्येन्म : विग्रेंह भी मिर्ग्द्र मिल् ने क्वार में न्युक्त में उपयो विश्व ०१० दिल नित्र शिक्ष विद्यालय किया स्टिम गुल्येड विरं पर्दे हिंचे प्रत्य हिंचे भराष्ट्र हिंचे प्राप्त हैं है परम्भज्ञ

विभागन्य विगमी प्रति द्विरी अनु हैं दे राया कें इस्य विने विकारी विने विभागे विने प्रियो विनः भविने विकार विष्ठ उन्य विश्व भाषा हो निष्ठ में कि भद्भून में भूर्यन में रिपासम्यिगियाययान्त्रभाग्यला विकारिक्ये सुरम् स्वर्त उड्डाटेंग्ट्रनं अक्रमित्रियं महभक्षभाक्षकां उद्या विनुद्रिये प्रकृते क् रे लाउपमि पहली किकाडिकीयंय वि धनुक्यण उन् अमें गःभूमे उ चिम्रश्रमीन्भाग भूत्रभूमिपाधः दिस्र अतः नुभेष्वा ही रिंचीएं नमःम्तिः जुन्दिलक्म् अएन विनिर्धेगः विक्रंक गुभाग्यान्भः विक्रहर् मी के मार के क्रा के के हितें थट कः मुभूग्याकट हि कन्मायंग्यु अर्थ्यानं इसमें ब्मिन्ना भी जन्म इंडिसिम्क्षे अल्बिस्डायेडः विश्व हे अवस् रिके मिन भड़े मिन स्यामिश्यामितिक रे क्या है अत्रमेहन दं विक्रीहे नहीं भुदिन्य भिवाह ग्या जा कि है हि हैं हैं भ्याव दनय के अन्य नमः विदेह हैं शिका किसाय कें क्व के नइहें प: मुक्त है दिश मिस्रों हिड एं इसकें। धरीडगड़ मिपिविश्वरमें नणम् कटिर्यप्रमें हिरिस्रिकी धूर्में अभागी विनमः जुभाग्य मिन्ने के किएक भूग्य भयाने पर्मण्य धर्मे क्या चिनि

भूकिउयमुक्भाइमुगयम्नाविधउयनभेनभमुभुभुष्क क्रिस्ट्रिनि किमाययानभः विमायय भयावादानायनभः भुद्धत् उच्चपद्भार्या ५ अट्रा विश्व सप्रापित्र हुन्ताः विभाग मा प्राप्ति है हिन्ता गरिने भ ह एक विश्वविष्ट हिंदू ए स्विद्धि हिंभेभेग्य अग्रिट है हिंही की विक्रयता है किही के ननित्रण कुछ नभः किहार ने पदा पति खड़े में प्राप्त भेड़ा निवसित का ने में ज्याने विश्वासन्त में अपने किहार किहार किहार की किहार भाष्युम्निव्यास्यादिक प्रमेश्हिस्हिण्यास्य निर्मे किस्ट्रिंग्यावि क्मभानिहेणी डेबेरवर्नी भीमा १ विम्ध्यी मुहरवर्नी भ भागम पण्धः नग्रुक्षक्षताः प्रद्यस्त्रनी द्वार प्रत्नेति विभी ही की भी अग्रहन्दे: नेभः वि किर्न्तिभागि क्षिमिता क्षी क्रम भाने उद् कः म्याय वर्ष महत्रामुश्री पर नियम् विकृति भाषाउरिमाहित्र म्भारतिकालेमावें के में में हिंद श्राभाई चें चंडी भारतिका निमा भि विष्युसीमार्किभाग्या भावस शहराधः गायहीक्यः दीयार रंगित्रा भागक्याया विकारमा भागक्याया विकार प्राप्त विकार विकार महत्व हरी विदिउच्यन्यः थ्यहरू मिनमें इन्ध्रु थर क्रिंडसाम कल भिन्न इंच्याप्रभी मन्भिन्न भूमिन लिलिंडवाक्रं भीक्ष

3 To

पद्मिशु भक्क कृत्त्व भूक अन् राजन हु के इन जी डे नम्मि वि दिही भी भार्यहूनभः हिं ही है ही हिंसा यह हासः हिंह है कि सम्में मुसिय । वहूरी। क्वः विभाभा नेइहे विनाः नमुण्याक्य महत्रभाषित् अल् । विने क मुक्टि प्रत्या उपायन मी धित्र क्य पनः मरेमुलद्रमा प्रायनमामि क्लका समिन वन् भरामिनभं मिनबासिउ द्वा या भरामिस् भर्यायुर्भावकः भरम्भित्उन्भ्रम् हत्नुयम्भूति विम्रभूत्रीभर्मात्र् द्रभाग्रयधिः त्रमधुक्षतः ह्रानीपिः सर्गामवेन्दर हीनीएहे भागेः न्भः क्रीत्रकं अरण्य विनियेगः विज्यम् प्रायः भक्ति प्रायी उत्रः सित् । भू । छिही किं भक्त मिवयनभः विक् हे छिही मिक्से विक् निष्ये विक क्व छिंहें ने इहरा छिहः मुभाय कट् ॥ जिल क्रा भर द्वाने विषयूर्व इस्वल रेश्यामा । वहारि : १७नः लि भेड्सुम्मिमायर भवकार् क्टिमडि: इटें: मह्मार्थाः मां मुहण्डीने लिक्टि मेहिडा: ३९३ गुण्डल विभव्यक्ति कर्वनिक्ष कर्वा क्षेत्र क्षे

विन्वीभक्षकम्डलयुरं विद्रभक्ष्याक्षेत्रक्षेत्रके विक्रम् विलभ उद्गाना भाषाया जा भहिष्म मिर के लाय पारेय ने रिके वी भण्डवेस भण्युन क्रीय्र प्रभी दिसिंदक्त भिद्युप्तिन प्रयुक्त इए नम्रे चे गाउँ के हल्सिम मुंद्र विदेश विद्या के निया देवा केन्डे का नम्यकल् निम्भू रात्या उर्था विष्ट गया वित्र मनामेर्ड क्ये विनिधि : विक्री देनन्य न्यः विक्र देन कि मिरमें ही के मिया लिहे में क्रियाय हैं में ने रहे हैं मा ने स्थाप करते मर्त्भम्मित् अर रूज्जे के किर्पत्मेण मियद्राभित अवव्य हः मर्थित मधनीलक्षप्र विवर्षक्षाञ्चननिकं मामाज्ञाभान्तं भागाज्ञम् वर भवीिअभू सपनाभ द्रभेश समाप्क सकला हर भेड़िन दे सीनीलक ्रभ्यास्य मार्गिम रवेगल्यु न्या उर्द्या विकास र विलभ्यक्षेत्रने सम्बद्धक्रियन्स् निलयं श्रीनीलक्ष्ठेष्ट िन्ध्यीनीलक्ष्मान्य क्रिण्धिहिष्धः नन्ध्रस्तः क्रांस्रीन लक्षे में या ही नीएं किंग्रिः नमः कीलके क्या विनि । विक्रिंग्री नीलक के यनभः रेहि की मिर्य सिमाय के क्रिक्र में ने के हैं। मार्कित्वक्तं निर्वित्वन्ति विभवत्ते विनामिति विभवत्ते विनामिति विभवत्ते विनामिति विभवत्ते विनामिति विभवति विभवति

4.7.

050

म्दिश्व विश्व क्षेत्र मीिमापा एक न्यापि क्राम भागभवमा द्वाय अन्दृष्ट कि कट प्रभा प्रकल्या प्रमाणिक कर्मा प्रमाणिक कर् थर्ग्डयेक्ट्रभाउ याम्ड्रम्मण्यनण्निवद्रथमण्डिहरूः न्वीहि भिमोहिशमण्युहिरमें हि कि दाना प्रारिह चससूरिमड कि गिर्म ट्रियः प्राप्त अक् ि विद्युग्दे वि क्रीक् में सुदे थी उनः क्रित्र भः अ विन्यसी भवाई प्रमुक्त में भव्या लाभू मित्र प्रभित्र थि । थाई क्रमः सीपग्रम् वी भवस्त्री भव्या सम्भागी विद्युग्य करी मवा

पण्डवंचीएं उप्तीयंमित्रः क्लगणं कीलकं मीमक्रियम्बर्गिनी क्रिक्ष्यं प्रतिकार्यक्रियं क्रिक्ष्यं क्रिक्षं क्रिक् भरसूर्ग नभुष्पक्रक्छेन्थ्रः ॥ रिक्री भिष्ट्रस्यायन्भः उडनेनथर द्मा कि उड्डामका भरतमा अनेरा थाई माई क्रिके कि मुया भिर्धिय क्रम्भ भिष्ठियम्क्रीन गुर्क हरावडी दिथार नम कि: ५.३ एक्रीमे उद्यान महत्र नवणास्मिनी के देवी कर स्वमण भर लेहिकेण मंद्रेप्तरं भिउवरक्षणकिक्युभ मह्यक्ष्ववलयाद्वि उपलि पर्म कुणी बरी बलके धल्मा मिटियाँ कि अद्याय वि की निर्मित्रवर्णेणी भे : उत्रः सित्रः ४०३ वि न्ध्यी जलवर्णी गुरी भूद्रथ क्षान्त्राधिः यत्त्रमाः जन्त्र्त्णीमूर्गिन्दर त्वीलं क्रीमित्रिः ग्रीकीलक्माल्यिक्टलनितः विक्तिमिश्कतवणीय्येन्यावि क्रिक्तीमिर भेः मिया रिक्व क्रीन्ड हैं भेः मुभ्य दर मुख क्रम्भु प्रकृषि सभानां प्रमुभे क्रिक्रिमनभी न्या स्याद्य लिमिक्रकम्बार्या अने लिक्सीमें लिमिही क्रिक्रम्म नव्येक्र भडम्भलव्यके यद्गम्भलव्यके द्रीवी विभेष् म्हिति विक्रमया

B.7.

039

हेंग्यूयनभः तंत्र्वभिः ४ द्रष्ट्रिन ॥ मेह्र्यमा क्यल ॥ द्वनं विनीलः भन्दिन्द्वलान्दिनमे यूग्भन्भान्द्विः भन्दिप्य द्वाद्विपद्वल्युग याना के कि विहार क्यी अव क्यी में मना व्यक्त भी विश्वित करी भारक्रिया रणवडी स्मिनिक्या देन विकेत क्रिकेटिक तिभी मुख्या प्राम्भार हयनक्रम्मा भिद्यावर के मिववर्रम् निर्देष्टर पडिशक्षिकार क्रियान हि विक्रवन्ति है कि केल भवानि हैणी। उने ह नवीं भु १ विष्य मीमिनिक अनु हे नव दिये हणारी कि भा िक्रहावड च्वड अल्निवि छेडीसीहं क्रमं मिर्क्स नमः रंगिश्वान् ॥ उत्रः वसन्मायायान् स्ति भूम् न अल् एनं रिं अते भ व्यन्ति वर्भनंकभलभन्भी ज्ञानि विष्णा मुक्त नद्गीनणयां करणां विष्णा मुक्त नद्गीनणयां करणां विष्णा मुक्त प्रमानि नी जाक ने महारा है जिस के का ने का ने का ने का ने का ने का निक्ष कि निक्ष क च्रियम् भिवरमं स्विभूम् वं विद्या द्वा । वर्भय्यम् भग्रुडी िवर्धयवयि। लक्ष्मचय्यी अनिक्ष्य अ विम्रुश्चीलक्षीत्र्य व्यात्र भ्रत्यार विष वायरीक्ष्यः स्वीत्रमेरवे व्या भ्रत्यि। िक्र ही निक्की वाभी स्वायन भें ॥ भिक्त विभन हुन भक्ष वय हम्ययः

िंदीभविष्ठपुण्यार्य मिरिंद्रं भवमञ्च विष्ये विदे न्त्र न्त्र उपिल्किन किने मधीगार क्रिक्न मधीगार के निर्देश करिया निर्द ल्नम्याद् महेत्भद्र ज्ञीपए हिक् इक्कान् भविष् दिन गिरिभ्राष्ट्रेष्ठेरिक्ति इस्प्रिप्ति भ्रायम्भित्यारं मियुभन्ति यम विर्णे रम्भत्यप्रमह्यं द्रीः क्रिटे स्तरं माभवहति धविश्वनाभेड वक्त विक्रिश्न विश्वभूषीभ्यक्तीभक्त मध्यन्दिधः मनसूर्याः भप्ता प्रामी है मितिः प्रमितिः वि-क्रमहर्में विकिल्डिणी स्ट्राम्सी मार्मिल्डिलिस्स क्रेनाः विष्युंद्रहः सीर्विभित्रमं में क्रिकि मिलिय में दे कर के देने स्याप्यदल् जिल्डीनभः भक्तये पक्तियाय विशे द्रिति ग्राय दि में मानय निलयें तेन यें तेन महत्त्व परिभ्रत निरण कृतियार् भुमने सन्ति कियार् भारित्यार क्रियार् कियार् कियार् कियार् कियार् कियार् कियार् कियार् कियार् कियार् उप्रेंत्र भेद्रभेग्यानं इल्गि सक्तरः विवस्न नेष्ट्यायः विवस्य क्षिनगण्यणयणे । उन्निष्ठः च अमलं विन्निष्ठित्सग्यउद्यभ ०५७ प्रमण्य पत्र भद्रोदि १ नभः विन्मि हः विद्वित्र मिरः भद्र चलया मिराया भुग्यर्थि कर मन्मिद्धि अने इहं साद मुख्यदर मेर्वमन अला।

विग्रं विभिर्त्भनं नव्यस्मर्भान्य प्रमित्रं भनहरनभूभी है धयभन्मिवि धयंडाहीउणी धयंडारे ५०० रिम्स्सीमन्ध्रत्मेत्र् रक्षाधः पद्मितः नन्याल्या ही नीलं सी मित्रः की किलं अलनि वि लिही सी सन्य पान भड़े मुद्रन भः किहा है मिरमें ही मिया मुन्र्यानकवे भार्मायनेश्ह नमः नम्य बद्द नेश्वित्रम् दियानामुलाम् अम्बरायिक क्षिक्रण मायद्वे व्यवसम्प्र र्भारमयक्रमं भर्मा ग्रम्परभन्भु भूद्रभिरव्यनः थानिहः महन्द्र भाभन् भिन्न निन्द्र वित्रयमभनी भव्षाप (अञ्ज्ङ्गीभर्भ बद्गाधः गयरं स्ताः सीभक्त्रा विराहीनी एं के मित्रि: वे कीलक्रा अलनि रिन्मः भिन्मविभक्षेणन है नभः सच (भिडिभाउ) है नभेनिहि कि उन्ति उत्ये भक्ल जन्म म नाधिकये कार्न हमाने क्यानिह विदे किंपिक के नमः विधान क्रिमिनिचल्लान क्रिक्मिय्यवभूमिनिमकलक्षिरिशिष्ठ क्रिमिनिमकलक्षिरिशिष्ठ क्रिमिनिमकलक्ष्रिशिष्ठ क्रिमिनिम्सिकलम् अभिविमिनिम्सि

क्मा वल्ल १ नग्रिय स्तुभा हिम्लिमा सम् स्म १ वर्ष ६ १ दिन न्तिनि अ किति । पार्द्रन उ क्ये श्र क्ये अ क्ये व क र्याचार्यय १५७य १५० मक्मिलक्षणविभक्षेत्रवञ्ज्यणि इस्मिवरनभिडिभक्लभ्रमण्डः भूण्डलनवुद्धल हिन्द्रप्ति क्लन्मिनि हैं हैं देशीय भरन्दरंग्रु रं भर्भायक हके ही दी कं दल दल दल सक किंपान के भाने हम्या निचां भाने क मिन विधमेपअवर्यमाभिनि मिाया भक्तरिंगि प्रक्रिमामकिनि क्व अच्याम्मेरिक निम्मक्र भक्तम् । प्राधिनिम्भेष्ठ कर् भण्यमंत्रदा मथनव्दुडिक्ष ।। विक्रुक्ष भए मामा महामा म्भगीभाषाः मध्मयनुक्रमेनिक्क मञ्जूणाङ्गितः हिस्लम् भक्त विश्रेशायनं कुद्रा गुरु अन्यत् विश्री अनेपरभे ननं वृत्ती धनकिव्यद्भ यस्भिविषिभञ्जलिकन्कः यउपरभ ० श्रीष मं विष्णं मं इंश्वेमित्रभंयुं में उत्भूपर्यं पन न न कहा हिष उभी अनम्भिति उद्येश यम् नभ्यक्ष ए विम्द्रनिति भर नुस इन क्लामिलक्य मन्त्रीलिउँचैन उस्मिर्गिण्य वनभः काष इभारतक्रें इन्दें यनगरंगाम उद्दे क ब्रिंग्यन उस् । विराम

150 1.A.

श्रद्धा यनिष्ठः यनमञ्जा बदस्यः यनग्वरणद्भात् उस्मिर्गा अने विद्वी अपन्ती अपने अल्याभि प्रमिन्न विभिन्ने अपने मी हैं भानवा ना जनमी रें भाजनमी रें भाजनमी रें भाजमी अरिश्वारमा याः पर्दे ना अस्ति वर्ण गर्दे : क्रिय हिंदिले प्राचित्र यहविश्वं प्रदेश वहन मनि विश्वे द्वनं पन्य भेनस् वि उम्भवीया भगम समद् निहिम्मिडिहेनमः गःकल परा है विम्धूकालवानं लिक्सिककातिकारी भटः छिने हैं ह मिनः वित्रं व्याष्ट्रायः क्रायुरामी नीजने अर्थह सामिन कि कृत्वा भारती अम्युग्महयानकभ नामक्रमाहलक क्र ग रिन्रु भन्यन्थनीभी भाना स्यानस्त पार्मिक दिने हैं नन्भे द्वारं सम्बन्धायी मामन्त्रयव भिनी मत्रु हि भद्रम्बह्मयेपरिभागुग्भा भद्रक्त्रनम्बर्भपिष्ट्रभाषि गड्डमं मिवलिः धेरड्रभणि सडारिकः समिविष्म मिन्द्रित हैं

क्यायहर्त्वार्यक कांभद्रकार भनित्र विश्वध्यी भद्रक लेखन्यभद्रभु हेरवर्षिः प्रत्युक्षु सः भद्रकलेख्यु हर्गाएम द्वीमित्रिः चिक्रीयके अल्वि वि गिभदक्त्य वि क्लेगुउपय यी-उत्राक्तायमें अलिक्स अस्तिकार विश्वादा विश्वा हर हिमार हिमाय देकिनम हीने हैं नश्य बद मोनन याक्नियए ॥ विम्यसीव्याक्तिनीभेत्र्य श्रह्मद्रीथः गराइ क्रकः वायामनीनहर्व लंगीलंभाः मेतिः क्रीक्लकं अल निवि विल्ये विल्ये भारत्स्य । उसुष्ट महेर्ग्या अलाह रेकि वाका अवस्थिति हैन है भिंदर ति, अनुपरिणाडभूगोधवीडम्। यमुत्युल्युक्तमाभाउपद्रद्रभूग द्वीहरूमिविक्मइय्ने विद्वमी रियं क्या स्थानिम रियं वस्यितिकः हज्यायाणी उद्देग्द्रीय १० हिहज्याय विश्वद क्लयूषी उन्नार्री १-७ ग्टर्शं म्यम्री गर्री भन्ने वृद्धार्थः गण्डीस्टः मीड्डमी म्ली च्वर हीनी एं में मार्जे : क्रीकिनक अलने वि रे के मीन गड़ी हम देश के कि मीन की में हम पट्टेम्हें दी चार छें भी मिर्ग्य माय ने कि भें ने दे दी प्रथ पढ़ , जिस् हें

मृह्वासाथि इत्रीष्ठास्था विज्ञास्य में मिरायण्ड्यनं क्यालय मां ज्ञाममुलद्रभुग्भ दिलेयन्छिडिभिडे दस्ते छड्मूं मडिभ्रह्पय (भिर्म्स् मीहरमार्भ त्र्स मिक्पि:गायर हत् : मीहरमीर वर क्षेत्रील हीमाति । उकिन्तक्म अलन्ति निक्रीके केंग्रमण्यनभः॥ विक्रिक क्षिण के क्रिया के क्रिया की नाइ कर में भूय महत्माण्य प्रिति एक प्रामिश्य के मार्गित कि पार्थ विक्र पार्थ में क्रिया के मार्गित के मार् वित्रिविनीभी निमीमिलिभुज्यां भूर्माभुवदन भच्डिमुल्य अप्यित्सिय्यम् इप्रक्रियनराननी धरुष्यस्मित्रः माणिक् निय वीज एयरिक्णवरी हित्रिणभाष्या भाष्यभाष्या कितान भाष्टिभारक लक्षायकम्क्रिके विम्यमीम्यक्षत्र हार्टीयः ग्याहक्षः मग्रस्यवर विनिरं दीमातिः पिन्मः क्लिकं अलनिवि विवेपार्षे क्यूक्रमद्रम् क्व क्वाव्टेमण्येही भ्रष्ट विनमेक्वविहरू रेगा विशिवा भद्रभूति मिरया भद्रभुक्य क्रम् कार्वे मूल्ये नहिं विक्रीश्राप्त मभ्येष्टर आक्षेत्रक्यामा विद्वेश्वा विश्वकृष्टि ककानिमम्भन्दे इक्रमायः थाइि । भन्दे भर्ये मन्द्रिम

भित्रम्वकदं मिव्रक्ष्या विष्कित्रभ्या विष्कित्रभञ्जानि महीदिनं क्यानभनिमं देशिक्सिक्सिक्ए रिभेडिम्यिं यि अल्पेणकी थी उने कुर ५ ३ विक्रम्बन्य न्भः विक्र भट्डिन एन विमानुथ म्भन्यं मिया ग्रेंड्रं भाइवडे हिन्दे सुलंबर मापद्भाग्य भहराके ब्रह्महर्मिद्रम्भ न्लें प्रमाण्यके हम्द्रक्मिद्रिक्म क्ले व्यक्ता न न लक्ष्मयं रिक्मिलिक निष्मिया एउड्स के क्रियम्भनिष् अदिनिषिवितिह मक्वश्राइन् । प्रमान्यक्ता भवा भारत्य पार्थिक भिनुग्रम्भार्वमञ्ज्ञाद्य भव्यव्यक्त्रभक्षक्त्र विक्रम् क्ल है विष्य नाभारे नेइन खन्या थि छिन्नु मुल्पिन क्मे भक्तमें। इंग्रिं भुदेश्रियुरे ह्यू लेह्र द्राया हु स्राम् क्रिक् क्रिक्ष वह गतिरगहण्टभमले मस्तिभेषि क्षित्मका मन्यानिष्ठि अविय हमाद्रागहल विवेक द्विष्ठवनप्रभञ्जयन्यम् भीनं भित्रणन नरं भाइत्रं रिने इसुले एक् विभव्यके एक दस्ति म् अ अं वर्मेनणं क्रारम्भरं धंप्रमेश्लिभरं के प्रमानिक के विश्व नगान्किरीए नुष्लयं गेण्य भरमिकं ममुठेश गंभाषी किन्न

धनाभगिरसर्। प्रतन्तित्वरम्क्रमलभन्धु। क्रम्यवउस ग्राक भिन्न ग्रामिक के हिए में हैं यभड़ लडा अथ्य भारम भड़ा भड़ के वर हरा थए जिन्दी भार 3:3 इलन्स धार्म्य माउउ एं महण्य ने इति इसुभः विन्भारमण वि व्यागा ड्रभण्डयण उन्नेनरः भूषे १ विन्ये मी मूभ उम्रभत्य शक्त प्रेश गर्यास्तरः सीमभेउमीकावेम्या एव एमःमात्रः विकलिक विकारा अलने वि । ए एम: मुभाउस्के रक्ष्यन्भः । रे अल्युन् रेम् भी क्लाभाउसामा रइनेइभभोउमारकारा उस्थिलिक एउएंभार मान्य नभाजना नमः रिएह हे मिन में मिया के क्वा हिन हो भाषा दर प्रभूशिद्ध कर्मिन्म रिक्वी मत्यारं भण्मी ग्रामिक स्मायिक हिन लिंड मानापानिम् निर्मा मुन्म क्रिक्ति मिहिड भी उप्रहर्म निर्मा अक्यान्त्रभाने रीक्षं उच्च कि विष्यम् निभे पहरूषा वर्षि अलनिश्वां लंडी भिः । विष्युम् निनिश्वां परिष् माणिनिक्री ०: ०: ०: भार लेक्क्रीनी: ४इट्रान मुम्भाइक्रियमुजल

विणमुक् विवित्रम् भित्रभाष भम् इया । धिं भर्भम्भण माध्य इतिलग्दा लिक्षिम् मुप्तम् किटिय सुर्गलद्भ यार्थे क्या कि विद्वान क्या विद्वानि में द्वार में प्रतिय है विद्वार के म्मिन्विकेपिपिपम्भेस भूरद्वण्डि विकले दिन्द्रभा भन्नि गर्भक्त्रभ उज्ञम्हर्मेभाइम्बर्धे ने भिर्मे भड़ उसे गारिय में के भिरं अचल भागीं अपूर्वभू उड़्या उड़्या निमार दूरा भुग क मदे अरपी क्रिकिमने क्राउंते: राम मा अइन्द्रमा विक्र अस यं मिनंपमुपितं भाइप्तयंतमा विभाइप्तयये रिक्रा भावयन णै उत्रः मर् भे अर्देशः मित्य वि भेर्द्र मः परमुद्धने वी उत्रेश इस्तयपुर् विमध्याभइस्तयभद्रधभद्रमध्यमभ्रद्धिः गय इक्नः भट्टार्यम्बराउनीर विद्यानिः भःकिक्मा अलन कि रि एमा देशा भेषालया भेड़े भरित हिंत ए भिरम् भाषिए लिक्ष् कंनेर भामम्यक्ष लिक्किकिः नुष्णेभग्सक्ष्वार मन्भूभूभनेभद्रमेः भवन्तेष्ठार्भिणनित्ये इन्धूम्भूग्रीग्रायः ० पुड स्विभनुष्यमाधाउनमक्तिइ हि ४६: पाइवका स्वी कर्णिक लियि उदिने विद्वल्युद्रमें लिः विम्धस् विद्वाग्यञ्च

वाग्रह्मवहिष् वर्षिक्षम् अमिव्हिन्द्रा विनिष्ना मिक्रिकार किन्त्रकर् अरानेवि विउद्येदमण्यि विप्रमुक्यणी उनः मिनः ४ अविन्भः मिव्या विन्ड बुद्दायनभः श्रः अच्वेद्राय मि मिनि पद्भाय वि उग्रेह्यं य भीनिभेषक्रय विन्धमान्धे च नमः भः उर्दूषेषक्रामः मि में भार के विकास विश्व या में में कि के कि हानि। भिष्या मिक्व भूने य अभ्य बल् मिष्ठ वने बटः अलिक किन्द्विभिन्न किरी छंडेद नारं न्यान स्ययन भागां विरम्पुरम् धरम् दिरिकरं ५६ए उदनमी भागातूर ने में भमादिश्य कर चदनीक्रमतान्त्रमान त्र केरि भरिम हिन्दे हर्ण्य माड दिश्वकाः हवनी सर्गित्वर ही नीर किमी असे स्नित्र प्राप्त विश्वेडवनम्देवि विम्रम्डे मि उनः मित्रि भ अन्त विस्तिम् क्वनेबर नभारिक है एड एनि मुब्बि उत्तर्य एने विवास विविध क्या मा स्वित्म कार्य विविध किया मारास है रेशनिहरू अक्रिकारकार मार्थिक में विकार वुलाब्या च पर्यु मारवर्भिम्य प्रति श्रम्मान खंगाः हिम् भारताराष्ट्रिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिंग्याभूकिं

भन्न अक्रमा भी उपयाद के बरे हर शिक्ष कर्ये कर्ने क्रम्यूमा ॥ १॥ श्येम्मडें प्रविम्मा द्वा अक्षांना गाले वर्षे भद्रमञ् भद्रेग् मभाष्ट्रभा । भीलकां भद्र हैं विभी प्रियिश एक में कि कि उन्ध्रित्रंग्रुयम्त्रा व्याप्याम् उचाम् ने भारती उम्रमान्नेत्वत्रभीमान् दिश्या कि विकास मान्य दे प्रक्रिय यकिटिसम्बद्धमा मुक्कियोभन्धिल ल्याडक्विनि मिउभो नि चैक्रुभिक्क्यू विश्वभागिक क्राक् भाग्यक्रमबयुध सुभः श्वस्त हिंग्नुभागितिक्तुपयि विक्टाम्ब्र्या । उन्ने व्या निष्यु । विम्रास् मियार्ष्ट्रक्म स्वाएम कंक विम्रहेर् वदिषः १५डि स्तः अक्र अक्र विक्र के स्वार के क्रिक्रिये के लिल के रमानवज्यन्में विधे उद्देशववज्या गिंमधार्वज्ञयाणित्रमञ्चला वज्ञयाणित्रपाद्व वङ्गयाणिन्य ग्रांभवद्भें हर प्राप्ति : युर्गिति । भग्यो भारति : इतिहै मिर्याये भेचाः मचभच्छः थिद्रलय क्व्याप्यात्म विद्रभः ेडिश होतीत्रथयने इयाय नामस्य क्रिक्ट के क्रिक्ट स्टिक्ट स्टिक स्टिक्ट स्टिक्ट स्टिक स न्य विष

70

मुखायेरमुर् पर्गा िने मुंदरं परं बुद्र भदिथी विद्वारीपां में इहा िकाण्डीडं परन्तसंयीमिवभी रिप्रमा क्ये विश्वास्त्री क्षेत्रवासिक्षात्रः भागाः अञ्चलम्मिन्यास्योभव्याभव्यास्य विश् हिंदीन्थरमिकंदर न्थरीम्दिनभगिकं हे मिए. र् कर् हें ने इक्ति हैं नुसूर्य दर्श मंस्ति सुल मुख्य था । शिमेष्ट्र भागिति सुदूर्भ पर भी से स्वापित स्वापित स् भीग्रे विस्पार्टिन में भारती मार्थिया महिया महिमार्थिया विनमद्द्रभागूणी उनः मिवः ५ ७ विम्रुसी निस्त्र सम्बर्भ दर्भवद्धिः रिथु स्तः भिष्मित्तन स्रापः भागमिवः भगभाम ज्वराध्यत्विविश्वास्त्र विक्रित्य सम्बद्धाः विक्रित्य विक्रित्य है। इंक्षिणके मिषणके कृत्र विक्रित्य सम्बद्धाः विक्रित्य विक्रित्य सम्बद्धाः विक्रित्य विक्रित्य विक्रित्य विक्रित प्रवाद्भव विश्वारित्य वश्वारित्य व योत्र योत्र भी वर्गमिव द्रमभूपनेभएं क्रमें एडंकिविस्य निर्विदेश स्याभि वितास क्रमण्ड नरकमे विद्वीकी रागारिका मिन् मन्भेतरं महिलामिन

हिम्भूग्रीभिष्ठिएःभन्भूम्बेदःदिषः भादिस्तः भक्तिएके दिन चूरिकिमिडिल्मा केनिक अलन्ति। विकेटिले भेडे एउर इयनमें लिए के स्टिमी दी मिन है के मिला के दें कर लिए के ने हैं के ड: न्यूयक्ए ; <mark>बवभक् विस्ट मुक्रेटि प्रश्यम् मुम्म</mark> क्पाने विहे प्रगाम्भूद्रभुभी हमा श्रिमलगड्डिंग्या असे मी व्याप्त वीमव्या म्याभ विमध्रमीव्भव्यम् स्विक्तां प्रमुख्यः । वाभव्यक्षेत्रां क्षेत्रां क्षेत्रां भाति । विक्तिकं धरण्ये विभावत्रां स्व वायन्भः विद्वानिष्ठिति महत्वभन्ने अल्येड विह्यत् हम्तिव व्याउनिक भन् उये हाभा यागेंड प्रम प्रमाना निव्यम्भ उद्दिर के बीहिंसु गहि अया युहिन दि हि पुत्र नहीं हि चय भें की है, व्यार हि विविद्यारीय स्वास्त्र के में के मिर में नित्र नेभद्रमा वेत्रनेभद्र विभग्धक्री न्यू थण्डक्ट नभः भण्डे । उस्तु विद्यान के हर एड्डि कि वित्र निर्मिक दल हैं। क्लूडी में क्लिम् भवन्त्र सुडिए भी रामा के मार्च करें। 出了 माभवर्षिम् हलाम्द्रिम्य कः भग्राभम् अभक्षमं 990 मिकिमायुग भंदुभन् श्रीभंद द्विभग्यन्तरी थरेबा भग्या भग्या भथद्यं भविषया अरिष्डः भनु॥ मसक्मस्थ्रथः ॥ जिसम्किरिशमान्द्रं मस्मेरिकिकेपनभावर हरा दिमुलाभकाक सम्राहित अलभा किली भेर दिही में दिसक सत्वयें प्रमत्वक्रभयं दिंशीं विभी किंगे क्री क्रमें ग्यनभः॥ हिंहा की मिरमालें कियायों क्रमाकी ने इक्ट भे अध्यक्त िममुक्त्रनर्रके रिचील यमार्थ भारत मार्थ मुगेर मार्थ प्रमुक्ति भी मन्त्र देश भूरान्ध्रहः काम्मन मिनेप्रिश्रा मंत्र तहने थरं मीमिन्सिन्स् भन्न विष्यप्रे प्रायम् के विम्ना मी हैं क्री मिने के के में भी क्री की प्रमण्यामनवया कार्य प्रमुक्त वरप्र प्रमक्त ही युरल वहामयु प्रमक लहा हिंगी ही एंग्री की हिंभी: ग्रीकी है ए दिन कविद्या कि एंग्रिकी मिर्सिक्रामद्रम्भत्ये मियण्ये। द्रम्करुद्र क्व्याध्रात व्यान्य न्य हे भक्ल द्वी नुम् चल्ट । अगमन निम्न लंग्रेह् भव्दा भिनिग्तनभे किन्याननगडने उल्भवन्द्रिगेहरू भएने हेरविष्ट मुद्राधक्तभावित्रभा हार प्रमुख्या वा कार मिक्तिविमयेड अच्यक्ष्यभहत्यप्रमें बेह्न भिड्मी उपमे नण्भानित्या भिक्षा महिमार्थि । विक्रं ममण्यामः ० विक्र

अध्यक्षरा व विकेश मार्च अधिक ने चन्दी मध्येक वे अपर्ये पार्टिक भी थिरभद्धवी विदे ने उक्तर्य पूरिक केंट रज्ये कि भेरापये व विदे ने ।वर्षे ० विद्वर्षाणिय विद्वने रे अ विद्वर्षे अल्य के विद्वर् ने जिथि के किंद्रें किया पूर्णिय ने भाग महा जन्म या अपूर्णि कि इयुउन्हित प्रायम् वभनव्याः न्नभी उण्क्रवर्भके म् इक्वर्रीपमे किउ०। किक्त्व म्रावन्य प्राप्त विकास गडमुए किक्नेनुः भभाभनि सम्भद्या अर्थ क्रम स्मिक्सम या रेविडा विद्वार्भ किए के एक निर्मा भन्भारभाषांभेले दिन्दे पेनुमायाभ दिक् भाभगान्त्ये दिक् हरण के धिडम भिन्न थेंद्रेसे मिन्न कु दिसुले हमने कि विक् ण्भागन्त्राभायक्रणभी भूद्रभेष्ट्रिकिर्ज्यधक्त्वरणाण्यविद्रभीग विभिन्भुएष्ट्रिये द्वनंत्रीम् मिय्भ भेड्रथे वर्भाग्य विश्वीद्विथे विगित्रचेंडी मुख्यपिश्वलेष्ट्रचेंड्र भ्रियं नक्त्र मान्येडिंग्सर्थ क्रिविभमारमेरियुक्ती क्रिकेण्युद्धी स्मार्थिंग्यावि । भन्भागा षी हिने दंभः भ्र अस्टिक्षें भेंद्रे भ्रम्हर्याम् भ्रम्हर्यु यन भेंद्रिन नगीमा कें भें हु की भेंदी मिर कें मिया के कें कव के थें

990

नेर्कः श्वः मुभ्यक्त विष्टचन्त्रम्य वि वह्यद्वरम्रम्थाया कराना में रित्यान का का का का का का कि का के कि कि मिरवण्डभ्रेशित्सहर्यायन्त्रक्रमलेवग्रा अत्मण्येवग्रतान्त्रभिमेदिहिह कुंद्रमिव्यो विभवसार्थि विश्वत्यन्य वी उत्रः मिर् ५० ॥ विश्व वीमित्रभवेशं वरमें वेटियः भरें के स्वार्थित स्वार्यित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य नभःकीलके अलनिव विहीं मिक्यनभः विदेशिः भारतिक यनभाः चयमित्यः विव्वीभीगास्त्रवन् भन्छ विनेष्ट्रभक्तना वर्षक्रभाभा नद्रम्भ गव्यम्पारक्रम् भिक्तिनिक्ष्म इन्युक्या मवगान्भाषा किम्भूमी मिव्कावर्भ म्स्म् द्भुवराधः भारिक्कः सीमिवक्रावर्गी ह्वा देविल सीमितिः के कीनके अलन विकिश्वी के मिन्छा वह नमें कि ही हा सी किरण क्रिमायामिन क्वाइणवर न्रह्मान्यः मुभुग्याद्य । प्रथमान निम्मिन्यर विविद्यम्गणमम् लेक्स्प्युकः एकः न्यावर्ष्ट्य भराइसाम्भाष्ट्र वारिवृद्धार्म नमेव विन्यस्य विश्विष्टि किरियाय ॥ प्रविभागः ज्ञायल्भून् भारमः मेरमः ने ल्ला भार व्ययभार भेगमा अ प्रक्रमा में भेटे विश्वत्नमः विष्टार्य में

तिवाय विक्री म्लाक्य विक्री निष्ठाय विक्री उपया विक्री दे याग्रेतीमञ्चार्गेहीत्में इट्या विही यो विही विहारिही विद्यार्थिती विद् विशेषवण्याः विल्ल्स्य स्विक्ता समुप्र के मुश्री भागे हम् नम्यक्षायद्वन्धार्वियेण्ये विमन्यक्षेत्रक्मधार्विये के क्षा यहें वरमान्धार्विष्ट्रं भद्रम्याध्य अभिवं मंग्यायह ।। मिस्याग्रः प्रवण्तिक्यां ज्ञार्याक्यात्र युग्तियात्र भारत्य हैं १ ने अंग्रेड़ भगवे हैं अपार कर है अपार के अपार के अपार के अपार है। उन िणारिस्पाएले। रंगानाशित्र एकया भिष्णान्ने उयाभय अर ज्यात्रण्याम्भक्डवाद्ग्रण्यान्याक्रवन्माय्भ्यक्रिक् याविन् भने एउवड्रायाचितं वाभम्य वह रेंडे के निमाने वह कि भनिए उहारिक्षे अधिमामार्थित यन दिनेविमाययारिके पाउन्य थिकलयानिथिकिकलेपिथउयुवक्रणार्धिकीभिष्ठेष्ट्रिकार्धिकीभिष्ठ 1009 अक्निणिपारम् विश्वचनमः विहि विश्वक्तयोही विश्वक्तिविध्य

विध्वनभगाउँ मानकन्य िंदीमानकन्यि परयो वस्त्र या। हिंदीम द्रारियों दें महाराष्ट्र कल विपरया भागित्य नभः में भू क्रमने नेम्रालक प्रने कितन प्रने प्रविक्ष प्रने प्रविक्ष में प्रमेश । व्यानका द्ये विक्रिक्ने क्लिकिकि ने निक्रिक्न भारति कर्मा निक्र भारति भूव क्रियमें भिन्में ।। प्रयानभः निक्याभागायानप्रमायाभागारि मुल्यायाम्बर्यायात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्रात्राप्रात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्रात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्रात्राप्रात्राप्रात्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात्राप्रात क्रयानिक्ती सनज्यानि अप्रति विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विक्राण्करम्याविद्यात्रियात्रिम् विष्यात्रिम् निष्यात्रम् निष्यात्रम् धुभिति मिक्दि मार्थिणं उत्स्त्राह्म भम्य उठ्छा संयम प्राचन १५ विरंगीके नित्तन्त्रा विभिन्नि भारकलयात्रभः हे इदिनम्याव म्यार्यप्रभयाविष्ठं नम्य मिनिद्रात्वेद्यम्यम् विन्तिन ज्ञापर्ग विज्ञातर्णय्यामा विज्ञात्ये विष्या विज्ञात्य व मन्यिति। विक्रम् पर्देशाचेके विस्वमन द्राणत्रा राज्यहीमाहै। र्जियाचे ।। विदेशिमी में ब्राक्कित्रभः विश्वाप्य स्टिश्चित्र विदेश

त्यक्ति दल उपान्यान्याः

विंही मी है तरहा विंची के लिंही मी लिंही मी लिंही भी मःभदल्के : ॥म्बन्धभग्राः विद्यागयो एय्या विद्याग्य । एययाठे में भुरुपया विधि हरू या विभागय उनिधारि उर्थे वि गुक्रिके ॥ महिष्टि॥ । भिर्दिन भाष्टियत्रभाष्ट्रिय प्रमुयारिम प्रस्थित मेरिका मेर्ने भी असर के प्राप्त मेरिका मेर क्रानागणपाउन द्वार न्यर्के क्रान्स्तिक स्वकृतिक दिन मन्त्रमणशुर्द्धां पठी अभिति ।। वि मन्त्रन्तारे एवं मने अविष्कृति न्यार्थियम्नारिभद्रथम्नार्थिऽक्षकन्तार्थक्केष्टनगार्थ्यन्त्रभूभाष्ट्र मुक्रन्यां महापलन्यां जिल्कत्रणणण्यां मः।। मही धुमिन्नि नि एन्स्य ५० नभागिमज्य जाति इन्हायकात्य क्रायकार्या । स्टिया गरयोविसुलयाभम्याम्स्याप्त्रायायस्याप्याप्यक्षाभास्यानद्वस्या नग्यानस्यानस्यायात्राम्।दिमुलयासग्याभन्तक्याभनिति भाष्यामम्भाष्याम्याक्ष्यात्राम् ॥ महिष्टामिति।॥ विकिन्नम् अस्यानभा के हिंदिशुरसारिमः मिव्रसारिप्रसम्त्रयोगित्यम् क्रियानि नमार्गिमययेनमध्यक्तायातिह्यामायाक्तयातियेश्वप्रथयः॥

33

भत्रावयया नद्वितया भन्मा हेर्या इस्तायक व्यन्न या भण्या भन्मा पर्नान्द्रीत्र हिप्रमुग्यामवायाम्याम्याह्रभ्यागत्याह्रक्रम्या उल्लाम् मुक्तः स्थितिक म्याम् म्याम् म्याम् म्याम् म्याम् म्याम् म्या उद्देशवर्षियायं विद्या भिरवर्षे या ये श्री भूकी विभागति वहायायिन कार्यालक देवान कार्या क लहा। उभरिद्यान्य क्लेड अंग्लिडिन्स प्रकल्डाली इति हः। भिन्ने एउक्ल होत्यः इत्र रा । भिन्ने प्रयोग क्षायां वित्र यां भेर हवां भाषायां हार याया वे न वाया व क्रमयात्र्यस्यात्र्राष्ट्रान्त्रययात्रात्रक्यात्र्रात्र्यात्र्यात्र् शिह्मान्मिदिशान्तिम्थाः विविष्यां ये त्रिष्यां विश्वयायं नियारात्रात्र्या धयायान्त्रमाञ्चानी त्रियमहै। छ हनमहै। के इसहै। के कारिक या। मिन्डइया भरामिन्डइया नुग्डइया प्याडइया एलड्य विशिष्ठ उह्या नेम्यूर्डिय म्यादिन्द्रयानन अभित्या विक्रवा मिवयामिवउभयानम्यानमः विक्रं वन्मणयान्मः विक्रं

उन्दूष्य लिंद्रने उक्षा लिंद्रहें का उसे लिंद्र के लिंद्र के लिंद्र के क य विक्रिया विकार है जिल्ले उन्या विकार अपि विकार हयार्य विद्वार्थ के क्रिक्न के क्रिक्न के स्वार्थ कि इत्रायक विम्यानिक निर्माल के निर्माल के निर्माण के न भिनालंद्रने विद्यालंद्र इत्योक्ति इत्यालंद्र नियम किडी विक्रंह: अराप्य के क्यानमः भारी भाषे का गडि देन द्वापन राप्टिं ग्राम्य विषक्षिक्षिक्ष क्षित्र किरिक्स स्तरमा वि उस्द्राह्मन ने स्वरंबेशद्भी रिभाइनयूनसंभे असुराम नाभक्ष्मी एमन्द्रित्मालक्ष्मिनायद्विप्वीवनम् अप्तुथ्य न्यां असे मंक्रिकेथि। । जिसकल कले विश्विम असम्बर्धि क्रियम् ३१७१भद्रथपद्रवे । स्थानिक विकारिक अपि मायि। क्रिमेंद्रप्य ये। गडवः मिनः भारिके भक्ति पिन हे भड़ियायस चङ्राधन् मिन्यामनन यामन यामन प्रयाप् ने याम स उय्योगपी अधि उद्यानि है के निन्धान प्राच्या विन्ता सिन्यो। भवश्रुविमितयारमन भ च्रित्रथवश्रुवाम्भेगक्र्यया।

इनेन: प्रामानिक: अमिक्मेष्यः (पवनेम)

चिक्किण्या द्वारी हुए या परमस्य गराम नियान दिभना अवा (थन) अमुद्रियन) प्रमुख्य प्रदेश हे एकि । अमुप्रधन ने प्रमुख्य न्द्रभी मन्य धनानाना प्रमारिक रावित शिव शामन प्रिनियना नियनेक्व सिन्।भाचाभाग्रन्।भद्मगाभद्गराभक्ष्यम्।भद्रार श यगुरि थड्याभाइ अर्थमें इ मच्ड हव व व मुन्माचक भायभ्य। भविभाविद्यक्र नायुक्तिविद्यान्य । भवित्र । भवित्र । भविद्यानित्र । भविद्यानित्र । भविद्यानित्र । भविद्यानित्र । िन्भन्भः मिन्यारिन्भन्भः द्वारिन्भन्भः द्वारिन्भः भन्या भरमसुग्य येणांय येगाभस्वणांक्र १ जान अस्त अहत् अहत्येश्व अ व्यम्ब भचक्रद्भमभनामभे भुउश्व हर्यायान् भामिव्यम्बन्भः। मिरम्भादा कि मिन्हर्य यह निर्देशमाय स्थित भारति मन्त्री क्रायडिक अस्ति के अस् मित्मी कित्रमात्व कन्मे । जयगिरिय क्रमक्ष्म मित्र प्रया , ज्यावनु शास्त्र अक्षिश्रम् अवस्था आवस्थामावंश्वीतिभाष्ट्र ग्भा थ्रमाभवन्ध्र स्थान्य क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक

DEPENDENT TO THE PERSON OF THE PROPERTY OF THE

国中国中华地方的历史中国的历史创新的国际和国际中部中国

यदर मास्त्रभाष्ट्रकेश्य है । विद्यारके परंभव मिन्द्र वय्त्रेशमित्य मित्राह्य मितः भन्ने भूमे म्या । मुम्म मी प्रमान्म भारताम्याप्याप्यापिकात्रवास्य अतः विस्ति विस भचेषिक्यनाभीसाः भारत्रकुरं ने । इद्वर्णि परिः इद्वर्णि । वेम्सुम्हामिन् शिलिन्य सुद्युद्धिक एक स्थापिक मिम् कें उसने श्रफ भारवयं कि कार विद्या कर्माया किंद्रभर ERED भरोभ स्मुग्याहर लिक्समीउद्दन्येभन्माउद्दन्यादिश्रण्याई मान्या स्ता अविकार के निया के निया कि कार्य के निया कि ५१९ विरस्यभागमें हिम्या विष्ठः श्रुष्ट मिरमोरिकवः श्रुष्ट मिरायाये दिनाः सप्टाक्त्या विषये क्रिये वस्य विषये ।। अ।। मसस्य मुख ग्भर्याम्भागिकित्राम्बश्चार्याः भागिकेवर्याः क्रिंग् के अन्य ग्या एल अतिक अम्योगम्यदा श्रेष्ट्र म. थ. िन्याहित्याहि हवमान हे दए मिर्से विही भही थरिन एक भविमाहम्यमारिक्षिक्ष्व हार्मियाया हिन्द्रे मेर्थे के विमार् िल्मः।उद्गरेशमभुगदय विभेशम्मीभूमेएउभव्याम्ब्रीह्द्धिः विन्ध्य र भूमें वेस्त्रम् क्रियाण्डमण्डा स्ट्राह्म स्ट्रिक्ट द्वार एमें विष्ट्वे व्यापे व्यापे प्रमानिक स्ट्रिक्ट व्यापे क्रियाण्डिक स्ट्रिक्ट व्यापे क्रिक्ट व्यापे क्रिक

CHEDWAND BE WAS THE BELLED

A PERSONAL THREE

भिक्कित्र अस्मिर्लिडे क्विड अस्पनिविश्वित्र अस्मिर्कित्र अस्ति । न्में हर्वहर्नि हिर्दे हरास्मा हरे मुद्रा हिंग् के नियं कार्य सादाहर है। विभक्षःक्षेत्रवय्यायम्भन्भः भ्रष्टामिरमे विभवग्रीयन्भ्रष्टाम भाय यानि भेडिअ कि कर क्वमा कि एन अविषे ए कार्ने मुन्युक टा छिन्ने वें दें दें अनुस्पेन्तमः छिम्बड्वन भण्तिनी अल्छि विस्नुनाय अक्षमभाषकार्गी उसक्यालं अवं मान्याविष्ठ एक्ष्रहराथान गर्ने महामाध्यम्परंग्यद्वीभाष्ट्रभन्भं वस्त्रह्यक्रिम् भद्रमी भूणभगभव्या धने विहे इवन भगति निहीनेमः विहे हैं। कृतनामिन्सानिति सियाई क्रियाक्षान्य क्षेत्रा छिडणवडा हित्यास्थित्रायाम भूकलमा भनेकल्मा युक्ट भारा लिक ने पूर्व ने मार्थ ने मार्थ ने भारा पर ने ज्यभारत्म एणारिमनियद्भन प्रथेगीया ज्येमभाष्ट्रायुन्क तित्रभा । विकार्विक्ष्यम् व्यव भाराभक्तम् विक्षा । प्राप्ति कन्द्रयाभिन्भः॥ वद्गर्भेषा विद्या वर्षे नन्न निमक्सिक्षि वार्षिणदण्यक्वाक्षिल्ह् हिन्डिक्म मिन्यम्बर्धांक्र रूग्यामिम् मुरूप्यमाविडम् वर्मेम्भायुर्गे र्यान्यान

मित्या मीरंभभद्य भिल्ं उपार एकि स्म नि बका निरम्भ किलेग द्राप्त भम् अत्रिक्ति लाहिक्यम । मित्रया क्ले हिं भन्कानुष्ठानायाभियनं ध्याप्रकेमप्यक्षिभव्यक्ष अनीम्मामिक्याभ प्रथके विश्वभूभियमपूर्विश्वम्यानिस वडी । इस् इथ्यम्सप्पा भन्ने व कल्पयण्य द्रभी । मित्या कन्ना रे नव ग्रुभयं किं भारा हुन विक्रिधियम् गिरण कर्द्रणविक्र हुठ्य भन्ध्रामिक्षाक्ष्पिताम्ब्याभगाविमाभूग्राम्भाग्यामा भ्रम् अभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभा नार्वामालयां माना भड़ियालयह व्याद्याय प्राप्त वर्ग स्वाद्य प्राप्त वर्ग स्वाद स्यार मुध्रम् प्रमाल्यक् लाउक् मिल्यक् भविगराने माल्य क्त्र क्रम्पकां एयो लिंह भंगिता क्रयनित्र ग्मामुल्य व उत्पारम् अत्यान्य क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न क्रिक्न निर्मा मुक् धार्मार्थाप्रत्र का कार्या हम् । व्या निक वि ये प्रश्लेष म्थः इक्तिकालार्यथाप्रकृत्यंडी आरायम्तिक्यालाक्षेड्राभार्य 09 वर्षक्रम्म् कुरायनकुर्धनिकि अल्यानक्राल्याध्यक्षि मद्रम् गार्यि विम्नाम् एयि से क्वा भाष्यि स्थार

राय विस्थान में प्राय निरम्भयात्य भ्रम्भयात्य प्रार भाउदीर्विकालय ज्वादकालयभगवकालय तर दक्षान आलय । द्यारायराय हिर्णाके ।द्याय अभिवय भभिवणायामा न्भारियश्रभारम् भारतिस्य विश्वता क्रियार्थम्या भाग कन्द्रयाध्यम् मिच्या सम्ब्रेपरिकन्द्रयाभत्तभः द्विति विसु वियत्या निर्णा निरम्य भ्रथा क्षिमं मने प द्राप्तिहर्गिव्या भूषा सित्रा लिया विद्यानिक निर्माण्या निवुद्गदर्भभागिमा रूपद्रगणमभव्यके तम्बु च रम्बिगा मिवः नित्य म्हाएं प्रारेशिक्नीम् म्लेम्ब्रन्तिरणान्तिक्षा॥ क्षिमिन्य भेमिलिकण सुरु मेयुर्भ हिंह भक्त मार्ज्य मिनभा के उसे शिरा भन्ने पूर्ण में कि प्राप्त में बुद्ध है। इसे " उक्टा एन्ड मिन्न पने प्रिक्ट नम् यह ट दिन उचि । न्याहिनाम्बर्भापा : मिन्ग्रेशंमुर्धाप्यभूक्ष्यं मिल्लास्त्रित भूषिउर्भारम्भामि मिर्मिभार देशि मुक्तम भी भिवः भी उसे भद्यनार्वेने वर्ष्ट्राण्डा मुड्युअपिल भन्ने नित्त म्याभना भामवि

रम्प्रधार्वन सिम्म मेम्प्रचार विन्ति स्वाप्त वनमिनिष्धाउपस्रवस्ति विधने होते हो मेन् विक्राल कल द रिकेश्वर्यात्मधाम्बद्धक्रम्पर्वे अस्ति निर्देश्वर्थे । ल्यम्यादिनिम् निष्यप्रिनिगभयामितिनील्यक्त्यु" मिक्किया लिनी सुरी अक्षिक्त स्या स्टिक्न स्थित विषये मित्र देनिष्मिन्तिकानाद्वापक्षेत्रन्थियाद्वाद्याद्वपक्ष्मभागित्व **५** उसर्गमा मान्य के दिर प्रयाभाव था प्रिया निव उपाप निव र काण्याभविष्यं अनुधिए के र क्षेत्र भागानि जाउभाग्नायसम्येगिन् निरंद्रधान भाष्यस्य भामा अपन्तरमा क्षा भेप इसे कर्निन गाम उरके भेर क्रिमान श्रम्मभय । नेना नयं मंग्री गुली निनिन्न कि दिए भी । जाइन्य भाषा उभगान क्रांसक्र मेशुर्ग उक्शमान मान्य मान्य मान्य भौभा उन्छा माना निया के दिन के किल भूटीउस मन्द्रिमभञ्भनीउस १० द्वीदिस्रिकिः भविश्व ०० महिः भक्षिक्षेत्र भक्ष्म् इस्मिण्डीक्रथाले नीस्री व्यस्ति। यभन्नक्यिति। क्रान्य्यमी। उन्नः माधीयाधनारुः थिउः ।

ध्यांलेक प्रक्रम्य हुउं भिग्नक्रगतिव्यण्डं मानीम्प्रि विक्रम्याभावभावनामानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्षणानिक्य

विसित्यनभः॥ उन्स्टिश्णान्य प्रभागे विविधानिका विद्यानिका विद्यानि

मार्थे अस्ति अस्ति स्वास्त्र स्थानिय स्थिति । उत्राः उयन्त्रभन्तिह्यूग्म्न्यूद्रम् १ ह्राव्यु १ ह्रा म् भया लुष्ट्रनमानिङ्गारीकविथद्धं यद्भिति हिन भूरे उ श्रा दियाभन्दिनि अलम् इित्स्या मिन् विग्र नवृद्य भारतम् अयोष्वरी व उत्वर्षाभद्रभू भिर्वलेक भदीयाँ यार्वर उपहली महिध्वमुं से जिड अवद्यामा भूति क्रिंडिंग्सित्या वर्सेडी चनन्छ्वन हिं या वर् रेपिनिंडिं ॰ पर्यास्मिद्मुक्षा ०९ किटिस्रा भनामव हन ने लिए पर ध्यणे नैभिषण्या गङ्गभण्ये भद्भ न गरामित्का असिवी भर्मान्त द्वारम् पराष्ट्रिक वैदे अते नल्क उउम्म एम में लिस्परण के स्वरं किमवभ गरे यें ए भड़िके विक्का कर हरने इस्ने माझ उरू उरु न्यू पलक्ष अ उपयम् नरेप्रीभे हुन्धा न्यंभार के न्यं विकान भयभद्र प यथ्यं भाषेतिन्तः भ्रानि विष्मा । इक्ष्यं किन्तर गाति मिष्टिमभोत्र हिरद्य अनिकाली विद्यु र पिथा पर् मायामल यमनितिस्त्री मुद्दान का एकि वण्यमभय

Build to the state of the state ख्रिकिअएण्युक् उड्डा विविषक्ता विकास के के पानिसी भी स्वार अपने प्रतिस्था के के कि पानिसी भी स्वार अपने प्रतिस्था के कि स्वार के कि पानिस्था के कि स्वार के कि पानिस्था के कि स्वार के कि पानिस्था के कि स्वार के 到中国的2012年14月45时间的18日间的18日本中的19日间 在511年16年至14年至14年至14年至14年至14年至14年至14年 的对于4月17年至19月17年1月18日南部中国国际 LAPTATE UNEXTENSION TO THE PROPERTY OF THE PR 中世界的中华中国中国和西部州中国中国 加多外江州。因为石田市的国家,在西西南部市场的大大大型和自己的 HARRIE SERECHANGE AND RELEASED TO SELECTION OF SELECTION (图)下共为68 经价值的的内部的内部的内部的现在分词的1898年代 与此。但是可是有人的知识的可以是Procedured in the procedure of the proce

